कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा
पार्ट III

* चन्द्रगुप्त नाटक के पात्र

मुख्य पात्र :

चाणक्य (विष्णुगुप्त) : मौर्य साम्राज्य का निर्माता

चन्द्रगुप्त : मौर्य - सम्राट
नन्द : मगध - सम्राट
राक्षस : मगध का अमात्य
वररुचि (कात्यायन) : मगध का आमात्य (मंत्री)
शकटार : मगध का मंत्री
आम्भीक : तक्षशिला का राजकुमार
सिंहरण : मालवगण मुख्य का कुमार
पर्वतेश्वर : पंजाब का राजा (पोरस)
सिकन्दर : ग्रीक विजेता
फिलिप्स : सिकन्दर का क्षत्रप (रक्षक)
मौर्य सेनापति : चन्द्रगुप्त का पिता
एनीसाक्रिटीज : सिकन्दर का सहचर
देवल नागदत्त गणमुख्य : मालव गणतंत्र के अधिकारि
साइबर्टियस, मेगास्थनीज : यवन - दूत

सिल्यूकस : सिकन्दर का सेनापति
दाण्ड्यायन : एक तपस्वी

स्त्री पात्र

अलका : तक्षशिला की राजकुमारी
सुवासिनी : शकटार की कन्या
कल्याणी : मगध राजकुमारी
नीला लीला : कल्याणी की सहेलियाँ
मालविका : सिंधु देश की कुमारी
कार्नेलिया : सिल्यूकस की कन्या
मौर्य पत्नी : चन्द्रगुप्त की माता
एलिस : कार्नेलिया की सहेली

नाटक के प्रमुख का वैशिष्ट्य —

(1) चन्द्रगुप्त — मौर्य - सम्राट वीर कृतज्ञ आदर्श प्रेमी। चन्द्रगुप्त चीते से कल्याणी की रक्षा करता है फिलिप्स से कार्नेलिया को बचाता है नन्द की सभा में निर्भीक होकर बोलता है ~~कारागृह~~ कारागृह से चाणक्य को मुक्त कराता है युद्ध में बहादुरी से लड़ता है जिसने कभी कोई उपकार किया है उसका उत्तर कृतज्ञता से देता है सिकन्दर और सिल्यूकस के सामने अपने उदात्त व्यक्तित्व का परिचय देता है। उसके लोक रक्षक रूप का परिचय उसी के उद्बोधन से मिलता है मैं अनु

एक पीड़ित आघात जर्जर पद दलित लोगों का संरक्षक है जो मगध की पूजा है।

(२) चाणक्य → मौर्य - साम्राज्य का निर्माता क्रांति का संवाहक गुरु प्रेमिका सुवासिनी का त्याग राजपाट एवं शासन का त्याग ~~करके~~ लेकर पूरे भारत का निर्देशक चाणक्य है। विदेशी आक्रमण का सामना करने के लिए चन्द्रगुप्त, सिंहरण अलका को समुचित निर्देश पर्वतेश्वर को परामर्श देकर सफल बनाना आम्भिक ~~सुभा~~ सुभासिनी राक्षस मालविका शकटार सभी पात्र को अपनी कार्यसिद्धि का साधन बनाना सुवासिनी का विवाह राक्षस से कराना चन्द्रगुप्त और कार्नेलिया का विवाह भी चाणक्य की इच्छा से होता है।

सिद्धनाथ कुमार — चाणक्य नाटक का सर्वाधिक शक्तिशाली पात्र है, चाणक्य व्यक्ति नहीं इतिहास है। राष्ट्रीयता की चेतना एवं ब्राह्मणत्व का उच्चतम आदर्श है। इसमें विशाखदत्त के चाणक्य की कुटिलता अवश्य है पर उसमें सार्वभौम शाश्वत बुद्धि वैभव भी है